पुस्तक समीक्षा

कहानी संग्रह : चॊक मॊदुर
लेखक : म.क.रैना
समीक्षक : डा. शिबन कृष्ण रैणा
पुस्तक प्राप्ति का पताः एक्सप्रेशन्ज़, ग्रावंड फ्लोर, पुष्प विहार, शास्त्री नगर, वसई रोड वेस्ट, डिस्ट्रिक्ट ठाणे, ४०१ २०२, महाराष्ट्र

विस्थापन की विभीषिका, क्रूरता एवं त्रासदी को झेलते हुए अपनी सीमाओं एवं क्षमताओं को ध्यान में रख जिन लेखकों, संस्कृति-कर्मियों एवं समाज-सेवियों ने कश्मीर की साहित्यिक विरासत को अपनी निष्ठा, लगन एवं अनूठी प्रतिभा से समृद्ध किया और उसे **हासोन्मुखी** होने से बचाया, उन्में श्री महाराज कृष्ण रैना का नाम बडे गर्व के साथ लिया जा सकता है। ऐसे ही जीवट वाले व्यक्तियों के दम पर समाज बडी से बडी मुसीबत एवं चुनौती का खुशी खुशी सामना करता है। और तो और हमें इस बात का एहसास भी हो जाता है कि वह समाज कभी टूट नहीं सकता जिसमें महाराज कृष्ण जी जैसे निःस्वार्थ समाज सेवी एवं कर्मनिष्ठ कार्यकर्ता दिन रात सेवारत हो।

पिछले दिनों नासिक (देवलाली) में महाराज कृष्ण से मुलाकात हुई। नाम तो सुन रखा था, भेंट पहली बार हुई। पेशे से इंजीनियर होने के बावजूद श्री रैना कविह्रदय रखते हैं। कश्मीरी, हिन्दी, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं में लिखते हैं और बहुत बढ़िया लिखते हैं। इतना ही नहीं, कश्मीरी समाज की हित चिंता में भी तत्पर हैं। मुम्बई की कश्मीरी पँडित सभा के मुखपत्र 'मिलच़ार', बैंगलोर से प्रकाशित होने वाले 'आलव' तथा प्रोजेक्ट 'ज़ान' से सक्रियता से जुडे होने का

श्रेय श्री रैना जी को प्राप्त है। इन्होंने मुझे अपना नया कहानी-संग्रह 'च़ोक मोदुर' इस विश्वास के साथ दिया कि मैं इसे पढूं और कहानियों के बारे में कुछ लिखूं।

'च़ोक मोदुर' निःसन्देह एक पठनीय कहानी-संग्रह है जिसमें छः कहानियां संकलित हैं जो कश्मीरी जनजीवन, संस्कृति, परंपरा, आचार-मर्यादा का सुन्दर द्योतन करती हैं। हर कहानी अपने आप में एक अद्भुत अनुभूति है, एक दस्तावेज़ है। अपने समृति कोष से निकले यादों के तन्तुओं को कहानीकार ने बडी एकाग्रता, संवेदनशीलता एवं खूबी के साथ बुना ही नहीं, अपितु एक सुन्दर मूर्त्त रूप भी प्रदान किया है। प्रत्येक घटना, प्रत्येक याद तथा प्रत्येक अनुभूति पाठक को अतीत में ले जाकर उसे गुदगुदाती है। कुछ देर के लिये पाठक सब कुछ भूल कर यादों के झरोखों से अतीत में झांक कर अपने वतन की माटी को सूंघता ही नहीं, सलाम भी करता है।

विस्थापन ने कैसे हमारे पारिवारिक रिश्तों की पोल खोल दी, कैसे हमारे तथाकथित मज़बूत रिश्ते नंगे हो गये, यह देखना हो तो संग्रह की पहली कहानी 'हवॉल्यह्यथ' पढिये। मानवीय धरातल पर हिन्दू-मुस्लिम रिश्तों की गरमाहट एवं निकटता का अन्दाज़ लगाना हो तो 'बॉतुल' कहानी का मर्मस्पर्शी कथानक आपकी आंखें नम कर देगा। यह कहानी पढ कर मन मसोस कर रह जाना पडता है और सहसा मुंह से निकल पडता है कि ज़रूर 'हिन्दू-मुस्लिम' रिश्तों को कोई नज़र लग गई है। 'वट्खूर' कहानी में गज़ब का हास्य भरा है। शहरी और ग्राम्य जीवन के अन्तर्सम्बन्धों को यह कहानी बडी खूबी के साथ रूपायित करती है। 'पछ़' और 'नसीहथ' कहानियां कश्मीरी परिवेश का प्रतिनिधित्व करने वाली सुन्दर रचनाएँ हैं। दोनों को पढ कर पाठक कश्मीरी जीवन और वातावरण के उन सुखद एवं स्मरणीय क्षणों में वितरण करता है जो अब दुर्लभ हैं। हब्बाकदल के चौक में रिज़ल्ट निकलने के बाद पुरानी किताबों की खरीद-फरोख्त का नज़ारा भला मेरी उम्र वाले कैसे भूल पाएँगे। कपूर ब्रदर्स, ओमकार बुक शाप, अली मुहम्मद एण्ड सन्ज़ आदि के नाम 'नसीहथ' कहानी पढने के साथ ही ऐसे

उजागर हो जाते हैं मानो आखों के सामने हब्बाकदल का दृश्य घूम रहा हो। (अली मुहम्मद एंड सन्ज़ के सामने पीताम्बरजी की पान की दुकान मेरी आंखों के सामने अब भी घूम रही है।)

'चॉक मॉदुर' की भाषा पत्रानुकूल, सशक्त एवं अतीव सुन्दर बन पडी है। कहानीकार का भाषा पर अधिकार ही नहीं, वह उसका कुशल प्रयोगकर्त्ता भी है।

कश्मीरी मुहावरों, उक्तियों एवं कहावतों के प्रयोग ने रैना जी की भाषा को ज़ोरदार बनाया है। मुझे लगता है कि कश्मीरी साहित्य को महाराज कृष्ण रैना जी के रूप में दूसरा बंसी निर्दोश मिल गया है। उनको मैंने 'कश्मीरियत का चितेरा' कहा था, इनको मैं 'कश्मीरियत का हितचिंतक' कहूंगा।

- डा. शिबन कृष्ण रैणा
२/५३७, अरावली विहार
अलवर, राजस्थान ३०१ ००१